अस्मितामूलक साहित्य एवं आंदोलन

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

अस्मितामूलक साहित्य एवं आंदोलन

प्रधान सम्पादक
डॉ0 अखिलेन्द्र प्रताप सिंह
सम्पादक
शालिनी रत्नाकर
डॉ0 प्रेमलता

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

अस्मितामूलक साहित्य एवं आंदोलंन

संस्करण : 2019
© सम्पादक
ISBN: 978-93-88998-03-1

इस सम्पादित पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के द्वारा प्रकाशित।

SAMPLE

समर्पित

बहुजन समाज के उन तमाम सक्रिय कार्यकत्ताओं को जो अपने–अपने स्तर पर सामाजिक कार्य कर रहे है।

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

सम्पादकीय

दुनिया के सभी समाजों में सामाजिक विषमताएँ रही हैं। समाज की अवधारणा व्यवस्था बनाने के सिद्धान्त पर मानी गयी है पर यह भी सत्य है कि कभी–कभी यही समाज ऐसे नियम बना देता है जो व्यवस्था न होकर अव्यवस्था बन जाती है। ये नियम इस प्रकार बनाये जाते हैं कि इसमें दो पक्ष निर्मित हो जाते हैं एक जो अत्याचार करता है और दूसरा जिस पर अत्याचार किया जाता है। भारत के सन्दर्भ में जाति व्यवस्था इसी प्रकार की बनायी गयी अव्यवस्थित और शोषण करने की अनुचित प्रक्रिया है। सदियों के अत्याचार, शोषण और दमन के बाद जब पीड़ित वर्ग में चेतना आती है तब वह अपना अस्तित्व एवं अस्मिता की पहचान और बराबरी के अधिकार पाने के लिए संघर्ष करता है। अस्मितामूलक संघर्षों की शुरूआत भारत में चार्वाक के भौतिकवाद से शुरू होती है और मान्यवर कांशीराम के अथक प्रयासों से राजनैतिक सफलता मिलने तक अनवरत् जारी रहती है। वंचित समाज अपने आप को अनेक अन्य नामों से संगठित करता रहा है। बहुजन एवं दलित शब्द खूब प्रचलित हैं, नारी अस्मिता के साथ–साथ आदिवासी विमर्श तथा किन्नर विमर्श अस्मितामूलक आन्दोलन के प्रमुख नामों में शामिल हैं।

डॉ0 अम्बेडकर के अथक प्रयासों ने इन समूहों को संविधान में अधिकार दिलाकर एवं आदमी होने का अहसास कराकर अस्मिता की पहचान कराई। अब ये वंचित समूह अपनी अस्मिता की पहचान के साथ समाज, राजनीति और आर्थिक क्षेत्रों में अपने अधिकार के लिए संघर्षरत हैं। इन्हीं मुद्दों को लेकर दलित, स्त्री, आदिवासी एवं किन्नर साहित्य के माध्यम से ये अपनी आवाज बुलन्द कर रहे हैं।

SAMPLE

हिन्दी साहित्य में उत्तर आधुनिकता के रूप में विमर्शों ने जोरदार उपस्थिति दर्ज कर यथास्थितिवादी साहित्य की जकड़ से लेखनी को बाहर निकाला। स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर साहित्य, आदि अस्मितामूलक विमर्शों ने हिन्दी साहित्य को व्यापक फलक पर पहुँचा दिया पर यह भी सत्य है कि पहले से कब्जा जमाये रूढ़िवादी साहित्यकारों को ये विमर्श नागवार गुजरे। अनेक अवरोधों और अनदेखी के बाद भी यह साहित्य अपने आप को स्थापित करने में सफल रहा। सदियों तक सवर्णों ने दलितों को, पुरूषों ने स्त्री को और इन सब ने आदिवासी एवं किन्नरों के अधिकारों को कुचलने का प्रयास किया और उनके अस्तित्व को स्वीकार करने में हमेंशा आना–कानी की।

दलित साहित्य एवं अन्य विमर्श आज बहुत तीव्र गति से साहित्य सृजन कर रहे हैं और इस विमर्शमूलक साहित्य की सबसे अच्छी बात यह है कि यह यथार्थवादी साहित्य है। कल्पना और मनोरंजन का साहित्य न होकर यह आप बीती का साहित्य है। यह अस्मितामूलक साहित्य मौटे तौर पर लगभग छः दशकों से अपनी यात्रा कर रहा है। इन विमर्शों के हिन्दी साहित्य में उभार ने वास्तव में लोकतंत्र स्थापित किया है। सांस्कृतिक एवं साहित्यिक स्तर पर वर्तमान समय में जो विविधता आई है उसमें इन विमर्शों का बहुत बड़ा योगदान है।

हम यह कह सकते हैं इन विमर्शों के इतने व्यापक स्तर पर उभर कर आने में सदियों तक दबा कर रखी गई लेखनी का प्रकट हो जाना प्रमुख कारण है। अब उम्मीद की जा सकती है कि चेतना का यह साहित्य और आन्दोलन एक दिन इन समूहों को मुख्य धारा से जोड़ने और आत्म–सम्मान से जीने को बाध्य कर देगा।

''अस्मितामूलक साहित्य एवं आन्दोलन'' पुस्तक इन्हीं विमर्शों से जुड़े गम्भीर शोध–पत्रों का संकलन है। इस पुस्तक में मेरे साथ सम्पादन का काम देख रहीं शालिनी रत्नाकर एवं प्रेमलता का सहयोग ही है कि यह पुस्तक आकार ले सकी। मेरे गुरू प्रो0 कालीचरण स्नेही का मैं आभारी हूँ जिन्होंने मुझे हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। मेरे प्रिय मित्र डॉ0 प्रदीप कुमार, डॉ0 विजय बहादुर गौतम, डॉ0 राहुल कुमार,

इंजी0 पी0 राम, इंजी0 हरिकृष्ण एवं सत्येन्द्र आर्या का सहयोग सराहनीय रहा। मेरी पत्नी प्रियंका सिंह का सहयोग भी सराहनीय रहा जिन्होंने समय–समय पर मुझे प्रेरित करने का काम किया। इन सभी का बहुत–बहुत आभार। उन सभी शोधार्थियों का आभार जिन्होंने बेहतरीन शोध–पत्र उपलब्ध कराये। टंकण का कार्य छोटे भाई नेहरू लाल राजभर ने बड़े ही बेहतरीन तरीके से किया, उनका हृदय से आभार।

अन्त में उन सभी मित्रों, स्नेही स्वजनों को विशेष धन्यवाद जिन्होंने मुझे हमेशा प्रेरणा दी, आगे बढ़ने तथा उद्देश्य प्राप्त करने में सहयोग दिया।

डॉ0 अखिलेन्द्र प्रताप सिंह
रमाबाई राजकीय महिला
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अकबरपुर, अम्बेडकर नगर उ0प्र0

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

विषय सूची

सम्पादकीय *(vii)*

1. सीमित वृत्त का विस्तार : समकालीन आदिवासी कवितायें 1
   –डॉ0 कर्मानंद आर्य
2. हिन्दी दलित काव्य और दलित समाज का सांस्कृतिक जीवन 19
   –डॉ0 अजय कुमार
3. डॉ. अम्बेडकर की दृष्टि में भारतीय नारी 25
   –डॉ0 मनुप्रताप सिंह
4. आदिवासी विमर्श स्थिति एवं गति 32
   –डॉ0 बलराम गुप्ता
5. समकालीन दलित कविता में प्रतिरोध के स्वर 49
   –डॉ0 अल्पना सिंह
6. दलित कविता में जीवन मूल्य और संघर्ष के स्वर 58
   –डॉ0 राहुल कुमार
7. स्त्री : समझौता नहीं–सहभागिता (मुझे चांद चाहिए के परिप्रेक्ष्य में) 67
   –शालिनी रत्नाकर
8. हिन्दी दलित कहानियों में दलितों का जीवंत यथार्थ 72
   –डॉ0 संगीता रावत

SAMPLE

9. दलित साहित्य का स्वरूप एवं विकास 81
–डॉ0 अखिलेन्द्र प्रताप सिंह

10. स्त्री अस्मिता आधुनिक सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में 87
–डॉ0 प्रेमलता

11. नासिरा की कहानियों में मुस्लिम जीवन का सच 94
–डॉ0 अमित कुमार भारती

12. स्त्री विमर्श–इक्कीसवीं सदी के आयने में 113
–डॉ0 नीलम सिंह

13. डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के नारी विषयक विचार 120
–डॉ0 गौतम सोनकांबले

14. स्त्री अस्मिता के प्रति जागृत दलित कविता 133
–डॉ0 अर्चना सिंह

15. दलित नारी की अनावृत्त पीड़ा 138
–आराधना वर्मा

16. दलित साहित्य एवं वर्तमान सामाजिक परिवेश 142
–संगीता

17. मुक्ति की आकांक्षा और सन्त कविता 150
–आनन्द प्रकाश सोनकर

18. दलित साहित्य में नारी 156
–डॉ0 शालिनी शुक्ला

19. दलित महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति 162
–दर्शना बंडूजी मेश्राम

20. वंचित समाज का सशक्तिकरणः एक विश्लेषण 172
–डॉ0 नन्दन सिंह, डॉ0 मनोज गुप्ता

21. हिन्दी की दलित आत्मकथाओं में
चित्रित अपमान के दंश 177
–डॉ0 चन्द्रशेखर

SAMPLE

22. शैक्षिक सन्दर्भ में महिला सशक्तिकरण एवं
महिला अधिकारों का संरक्षण 183
–हेमवती रावत

23. रामदरश मिश्र के कथा साहित्य में
नारी मुक्ति के स्वर 191
–डॉ0 रेखा गुप्ता

24. दलित राजनीति के नायक कांशीराम और
बहुजन राष्ट्रवाद 198
–रमेश कुमार सिद्धार्थ

25. कांशीराम और दलित राजनीति 227
–डॉ0 बृजेश कुमार गौतम

26. उपन्यास 'चल खुसरों घर आपने' में स्त्री
अस्मिता और मुक्ति से जुड़े कुछ अहम सवाल 229
–डॉ0 रवि कुमार गोंड, कविता कुमारी

27. स्त्री–विमर्श के परिप्रेक्ष्य में महीयसी
महादेवी का चिंतन 237
–प्रो॰ उषा सिन्हा

28. नारी सशक्तिकरण के प्रेरक डॉ0 भीमराव अम्बेडकर 243
–प्रो॰ उषा सिन्हा

29. भीष्म साहनी के कहानी संग्रह 'पहला पाठ'
में स्त्री जीवन का विश्लेषण 248
–रितु राणा

30. जूठन' एवं 'अछूत' आत्मकथा में स्त्री जीवन 263
–जगदाले अप्पासाहेब गोरक्ष

31. तसलीमा नसरीन का साहित्य और
स्त्री मुक्ति का संघर्ष 272
–शिव दत्त

SAMPLE

32. दलित चिंतन के बदले परदृश्य और सूरजपाल चौहान की आत्मकथा 'तिरस्कृत' 281
–दीपक कुमार भारती, सोनू कुमार भारती
33. पंचायतीराज व्यवस्था में वंचित समाज की महिलाओं की भूमिका 288
–स्मिता मुरलीधर भगत
34. रामदरश मिश्र की कहानियों में नारी की स्थिति 298
–बन्दना कुमारी
35. हिमाचल की हिंदी कहानी में नारी जीवन का चित्रण 316
–शालिनी देवी
36. क्रान्ति की भूमि फ्रांस और बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर 323
–डॉ0 यशवन्त वीरोदय
सहायक सूची 337

नमूना • SAMPLE

1

सीमित वृत्त का विस्तार : समकालीन आदिवासी कवितायें

डॉ0 कर्मानंद आर्य

हिंदी साहित्य के इतिहास में पहली बार एक ऐसी युवा पीढ़ी आई है जिसमें बड़ी संख्या में दलित–आदिवासी रचनाकार शामिल हैं। दलित–आदिवासी कवियों में कई नाम तो ऐसे हैं जिनके बिना हिंदी की समकालीन कविता अधूरी प्रतीत होती है कुछ खास जातीय समीक्षकों द्वारा हिंदी कविता में हमेशा रुदाली का स्वर दिखाई देता है। कभी भाषा–छंद–अलंकार तो कभी अभिव्यक्ति के खोटेपन को लेकर। समय बदला है और समय के साथ साहित्य के प्रति लोगों की सोच भी बदली है। वे दिन और थे जब साहित्य को समाज के आगे चलने वाली मशाल के तौर पर देखा जाता था पर अब स्थितियां भिन्न हैं। आज साहित्य और समाज में मध्यवर्ग और हासिये पर धकेल दी गई जातियों और समुदायों का उदय हो रहा है। यह हिंदी कविता के एक हजार वर्ष के इतिहास में अभूतपूर्व घटना है। समय का पहिया डोलता है और डोलने के साथ ही लम्बी दूरी भी तय करता है। आज दलित आदिवासी कविता में ऐसे स्वर उभरे हैं जो सदियों से संतप्त थे। उन्हें अनपढ़ बनाये रखने की सामाजिक–धार्मिक कोशिशें थोथी हो रही थीं। अब दलित आदिवासी शिक्षित हो रहे हैं।

यदि आदिवासी साहित्य की बात की जाय तो प्रमुख रूप से तीन बिन्दुओं पर ध्यान जाता है जिसके इर्द–गिर्द ही आदिवासी साहित्य

विमर्श को केन्द्रित और संकुचित कर देने की कोशिशें की जा रही हैं। पहला, आदिवासी साहित्य लिखित नहीं है। यह लोक साहित्य है और अभी इसके शिष्ट साहित्य का प्रारंभिक दौर है। दूसरा, आदिवासी साहित्य और कलाएं अनगढ़ हैं जिन्हें भारतीय और विश्व साहित्य से सीखकर समन्वय बनाकर 'सुघड़' बनना है। यहाँ भारतीय से तात्पर्य हिंदी, बांग्ला, ओड़िया तमिल आदि का 'विकसित' साहित्य है। तीसरा और अंतिम बिंदु यह है कि आदिवासी साहित्य प्रतिरोध का साहित्य है। आज का आदिवासी रचनाकार इन स्थापनाओं का मुखर विरोध करता है। उन्होंने अपने प्रतिमान गढ़े हैं। अपने साहित्य और संस्कृति का मूल्यांकन भी किया है पिछले साल दिल्ली में आयोजित विश्व पुस्तक मेले का केंद्रीय विषय थाः 'देशज आवाजें–भारत के लोक और आदिवासी साहित्य का मानचित्रण और प्रकाशन'। यह अकारण नहीं है इसकी प्रासंगिकता इस दौर में आदिवासी साहित्य, संस्कृति और जीवन की दशा–दिशा पर विचार करने का यह उपयुक्त अवसर है।

आज की प्राथमिक आवश्यकता है कि आदिवासी साहित्य की अवधारणा को मजबूती से रेखांकित किया जाय जिसमें व्यक्ति की बजाय सामूहिक जीवन–दर्शन की सनातन परंपरा रही है। उनके मिथक और ऐतिहासिक सन्दर्भो का अर्थ सिर्फ इन्सान और उसकी आत्मिक–भौतिक आवश्यकतायें नहीं रहीं. यह शाश्वत सत्य है कि समाज और संस्कृति राजनीति का आधार होते हैं और जब समाज बदलता है तब राजनीति भी बदल जाती है। साहित्य इस समाज को बदलकर ही राजनीति से संघर्ष करता है। सातवें और आठवें दसक के बाद जब भारत में अस्मिता बोधी जमातों ने वर्चस्ववादी समुदाय को चुनौती देना आरम्भ की राजनीति सहित सामाजिक संस्थानों में उनका दखल बढ़ा तभी से जातिवाद के द्वारा राजनीति और समाज के प्रदूषित होने का मिथ बनाया गया। उसने अस्मितावादी उभारों को चुनौती दी, मजेदार बात यह है कि उन्होंने खुद को 'यूथ फॉर एक्वालटी' जैसे नामों से संबोधित किया या फिर 'आम आदमी पार्टी' जैसे नए अवतारों में अवतरित हुए। भारतीय सन्दर्भो में यह धातव्य है कि द्विज विचारधारा या उसकी वाहक जातियां ऐसा व्यवहार करती हैं जैसे उनकी उपस्थिति संसार के कल्याण के लिए